10 जून 2019
जिनवाणी 18
ISSN 2249-2011

शोधालेख

सम्राट् खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का ऐतिहासिक महत्त्व

डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा

इतिहास के साधनों में सबसे प्रामाणिक साधन शिलालेख, मूर्तिलेख, ताम्रपत्र, सिक्के, ग्रन्थ, लेखन प्रशस्तियाँ, भ्रमण वृत्तान्त, चरित्र, वंशावलियाँ, पट्टावलियाँ आदि अनेक हैं। उनमें शिलालेख से ग्रन्थ प्रशस्तियों तक के साधन अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। क्योंकि प्रथम तो वे घटना के समकालीन लिखे होते हैं, द्वितीय उनमें परिवर्तन करने का अवकाश नहीं रहता है, और वे चिरस्थायी भी रहते हैं।

भारतवर्ष के पूर्वी समुद्रतट पर स्थित कलिंगप्रान्त प्राचीनकाल में (ईसा की पाँचवीं शताब्दी तक) भारत का गौरवशाली प्रमुख राज्य था। क्योंकि भारत के पश्चिमी एवं पश्चिमोत्तर सीमान्त क्षेत्रों से विदेशी आक्रान्ताओं का आवागमन प्राय: निरन्तर चलता रहता था। अत: वहाँ राजनैतिक अस्थिरता सामाजिक मूल्यों में संक्रमण एवं आर्थिक क्षेत्र में निरन्तर उतार-चढ़ाव की विषमताओं के कारण विकास की धारा निरन्तर प्रभावित रहती थी। जबकि सुदूरपूर्व एवं दक्षिण में ऐसी परिस्थितियाँ नगण्य प्राय: होने से वहाँ के साम्राज्य योग्य नेतृत्व पाकर सर्वसमृद्धि के पथ पर अग्रसर रहे। 'कलिंग' भी एक ऐसा ही राज्य था। इसकी सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, संगठनात्मक आधार-भित्ति कितनी सुदृढ़ थी यह बात इसी तथ्य से जानी जा सकती है कि ईसापूर्व काल में कोई भी कलिंग विजय के बिना अपने आपको दिग्विजयी नहीं मानता था।

यह कलिंग-प्रान्त वर्तमान में ओडिशा के नाम से जाना जाता है, जो कि इसका भाषा आधारित नाम था। क्योंकि प्राचीनकाल में वर्तमान ओडिशा को दो अलग-अलग नामों से जाना जाता था। उत्तरी उड़ीसा को 'उत्कल' एवं दक्षिणी उड़ीसा को कलिंग कहते थे। दक्षिण-क्षेत्र की नेतृत्व शक्ति के वर्चस्व के कारण इसे समग्ररूप से भी 'कलिंग' नाम से जाना जाता था। वर्तमान उड़ीसा प्रान्त की राजधानी 'भुवनेश्वर' से लगभग आठ किमी. दक्षिण पूर्व में 'कुमारी पर्वत' है। प्राचीन काल में यह एक अखण्ड पर्वत था, किन्तु बाद में आधुनिक सड़क अभियन्ताओं ने राजमार्ग की लघुता (शार्टकट) के लिए इसे बीच से डायनामाइट से उड़ा दिया और यह पर्वत आज दो पहाड़ियों के रूप में उपलब्ध होता है, जिन्हें क्रमश: 'खण्डगिरि' व 'उदयगिरि' कहा जाता है। 'उदयगिरि' पर्वत के शिखर पर ऐतिहासिक 'हाथीगुम्फा' नाम की गुफा है, जिसके द्वार के ऊपरी भाग में भीतर की ओर दिग्विजयी सम्राट् खारवेल का यह महान अभिलेख उत्कीर्ण है। इस शिलालेख का अन्वेषण करने वाले मनीषियों की त्रिवेणी में महापंडित सांकृत्यायन, डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल एवं डॉ. राखालदास बनर्जी जैसे महान विद्वान थे। इन्हें सन् 1924 ईस्वी में इस शिलालेख के बारे में सांकेतिक-सूचना मिली। उस सूचना में यह भी समाहित था कि यह शिलालेख ब्राह्मी-लिपि में है तथा इसकी भाषा 'प्राकृत' है, तब ये तीनों मनीषी 'ब्राह्मी लिपि' का गहन अध्ययन कर वहाँ पहुँचे। स्थानीय लोगों को इस शिलालेख के बारे में तथा इसके स्थान के बारे में कोई जानकारी न होने से उसकी खोज अत्यन्त कठिन हो गयी। अन्तत: जब वे इस शिलालेख के निकट पहुँचे तो वहाँ विद्यमान पुरातात्त्विक महत्त्व की सामग्री के साथ इस कालजयी शिलालेख को पाकर आनन्द से विभोर हो उठे। लगभग छह माह वहाँ रहकर उन्होंने इस शिलालेख का सूक्ष्म अध्ययन किया तथा इसकी प्रथम प्रतिलिपि बनायी। जिसे डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल ने सर्वप्रथम

Scanned by CamScanner